भूमिका

'**पारिजात**' हिंदी उपन्यास के इतिहास में अत्यंत महत्वपूर्ण कृति है। यह बहुविकल्पीय परिवेश को अपने भीतर समाहित करने वाला उपन्यास है। इस उपन्यास में सभ्य और बौद्धिक समझे जाने वाले समाज में एक स्त्री के परिवेश एवं उसके त्रासदीपूर्ण जीवन को दिखाया गया है। वर्तमान भारतीय सामाजिक संरचना की निर्मिति इस तरह हुई है कि समाज, परिवार व देश की पूरी सत्ता पुरुषों के हाथ में है और स्त्री सत्ता को महत्वपूर्ण नहीं माना है। पूरी कथा पाठक के मन मस्तिष्क में गहरा स्थान बना लेती है और सभी के माध्यम से एक स्त्री का व्यापक परिवेश उभर कर सामने आता है। पारिजात में धर्म की विशेषता दिखाकर नासिरा शर्मा ने उपन्यास की खोज को पुख्ता विचारों से बाँधा है क्योंकि यह विचार नासिरा शर्मा के उम्मीदों की जड़ को स्नेह के तार से मार्मिकता का नया रूप प्रदान करता है। यह विचारों की जड़ता और धर्म में हिन्दू- मुस्लिम के विचारों को पूर्ण रूप से तार्किकता प्रदान करता हैं। पारिजात की खोज ही एक नए उम्मीद की खोज है क्योंकि परिजात व्यक्ति के भावी जीवन की पड़ताल करता है। उपन्यास में मूल रूप से व्यक्ति और धर्म, जातिवाद और नारीवाद के बीच में फैले पुरुषवादी विचारों के वर्चस्व को दिखाया गया है।

जहाँ तक धर्म की बात है नासिरा शर्मा की कलम हमेशा अपनी कहानियों, उपन्यासों के माध्यम से (हिन्दू-मुस्लिम अनेकतावादी दृष्टिकोण को एकता का रूप प्रदान करती है।) सत्य की खोज में किस प्रकार व्यक्ति खुद की खोज भी खो देता है इसका यथार्थ 'पारिजात' में देखने को मिलता है।

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध का विषय **'पारिजात' उपन्यास में स्त्री** है। इस विषय के चुनाव का कारण यह रहा है कि इस उपन्यास में स्त्री अस्मिता की खोज को एक पुरुष के माध्यम से दिखाया गया है। तथा साथ में ही यह हिंदू-मुस्लिम सामंजस्य को भी प्रदर्शित करता है। इसमें हिंदू धर्म की गंगा-जमुनी संस्कृति के साथ मुस्लिम धर्म के मुहर्रम, मसनवी शायरी, आदि को दिखाया गया है लेकिन इस कहानी में हिंदू-मुस्लिम प्रेम को अत्यधिक दिखाया गया है। समाज में धर्म के नाम पर प्रेम को लेकर लड़की-लड़के कितना डरते हैं, इसे भी दिखाया गया है। इसके साथ ही साथ अंत में दोनों जब अपने वैवाहिक जीवन में निराश हो जाते हैं तो एक-दूसरे से शादी भी कर लेते हैं। इस तरह से इस

उपन्यास में हिंदू-मुस्लिम प्रेम को भी दिखाया गया है। जब व्यक्ति अपने जीवन में हताश हो जाता है तो धर्म इत्यादि चीज़ें पीछे छूट जाती हैं।

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबन्ध को कुल चार अध्यायों में विभाजित किया गया है। अंत में संदर्भ ग्रंथ- सूची दी गयी है। प्रथम अध्याय '**नासिरा शर्मा: समय से साक्षात्कार**' है। इसके अंतर्गत हिंदी उपन्यासों के विकास को संक्षेप में बताते हुए हिंदी उपन्यास की विकास यात्रा में प्रमुख लेखिकाओं के योगदान के साथ-साथ नासिरा शर्मा के स्थान को भी दिखाया गया है। इस अध्याय के प्रथम उप-अध्याय '**नासिरा शर्मा का जीवन व्यक्तित्व**' है। इसमें इनके जन्म, शिक्षा-दीक्षा, वैवाहिक जीवन आदि के बारे में विस्तार से दिखाया गया है। द्वितीय अध्याय **नासिरा शर्मा का कृतित्व** में इनकी साहित्यिक विचार धारा और उनकी कृतियों के विवरण के साथ ही उनकी कृतियों पर मिले पुरस्कारों का उल्लेख भी किया गया है।

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध का **द्वितीय अध्याय 'स्त्री जीवन के विविध आयाम: संघर्ष एवं मुद्दे'** है। इसके अंतर्गत स्त्री-विमर्श की उत्पत्ति के साथ ही सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक एवं राष्ट्रीय-अंतरराष्ट्रीय स्तर के महिला आंदोलनों को दिखाया गया है। साथ ही महिलाओं के शोषण व अधिकार एवं आंदोलनों में महिलाओं की भूमिका को स्पष्ट रूप में रेखांकित भी किया गया है। जिसमें प्राचीन काल की स्थिति के साथ वर्तमान स्थिति के परिवेश में महिला किस तरह शोषण का शिकार हो रही हैं, इसे भली-भाँति अभिव्यक्त करते हुए दिखाया गया है। इसका **प्रथम उप-अध्याय 'पाश्चात्य जगत में स्त्री-संघर्ष'** है। इसके अंतर्गत यूरोप के देशों में हुए स्त्री अंदोलनों जिसमें सर्वप्रथम फ्रांस, इंग्लैंड एवं संयुक्त राज्य अमेरिका है को यथार्थ रूप में दिखाया गया है। उन स्त्रियों के आंदोलनो को देखने की कोशिश की गयी है। इसका **द्वितीय उप-अध्याय 'भारत में स्त्री संघर्ष'** है। इसके अंतर्गत भारत में महिलाओं के संघर्ष के मुद्दों पर किन-किन की अहम भूमिका रही है। किस तरह महिलाओं के शोषण के विरोध में राजा राममोहन राय सावित्रीबाई फुले, डॉ.अम्बेडकर आदि ने सफल कार्य किये जो भारत में स्त्री-विमर्श को आज तक जिंदा किए हुए है। इसको भी अभिव्यक्त किया गया है। **तृतीय उप-अध्याय 'वर्तमान समय में स्त्री-संघर्ष का स्वरूप'** है। वर्तमान समय में स्त्री-विमर्श का जो स्वरूप रहा। उसको भूमंडलीकरण, आधुनिक दौर आदि को समाज के सामने उभारने की कोशिश की गयी है। महिला किस तरह अपने आप को समाज के सामने प्रस्तुत करती है व किस तरह शोषण का शिकार बनती जा

रही है उसको भी भली-भांति दिखाया गया है। आज बाजारवाद महिलाओं के शरीर को इस्तेमाल कर रहा तथा उसमें नारी-स्वतंत्रता एवं उनकी अस्मिता के साथ-साथ यौन-स्वतंत्रता की माँग भी उठायी जा रही है।

प्रस्तुत लघु शोध- प्रबंध का **तृतीय अध्याय 'पारिजात' स्त्री- संघर्ष एवं अस्मिता का स्वरूप** है। इसके अंतर्गत इस उपन्यास की कहानी की शुरुआत के प्रकाशन काल को बताते हुए, उनमें जीवन व्यतीत कर रही स्त्रियों के शोषण को दिखाया गया है। इसका **प्रथम उप-अध्याय 'पारिजात' में स्त्री का स्वरूप** है। इसके अंतर्गत नासिरा शर्मा के उपन्यास में व्याप्त स्त्रियों के शोषण के साथ उनके संघर्ष को अभियक्त किया गया है। साथ ही उसमें स्त्री किस तरह से अपने अधिकारों की मांग के साथ संघर्ष करती है इसको रेखांकित किया गया है। इसका **द्वितीय उप-अध्याय 'पारिजात' में स्त्री- संघर्ष** है। इसके अंतर्गत इस उपन्यास में स्त्रियों के संघर्षशील व्यक्तित्व को दिखाया गया है। जहाँ वह घर परिवार व समाज में निरंतर संघर्ष करती है। स्त्री जीवन पर केन्द्रित उपन्यास में स्त्री-जीवन की समस्याओं को दिखाया गया है। जो हिंदू-मुस्लिम एकता को भी अन्य धर्मों के साथ प्रदर्शित करती है। इसका **तृतीय उप-अध्याय 'पारिजात' उपन्यास में स्त्री अस्मिता** है। इस अध्याय के अंतर्गत हिंदू-मुस्लिम स्त्रियाँ अपने अस्मिता की खोज किस रुप में करती हैं, पश्चिम देशों की महिलाओं के साथ ही एक महिला के बाद दूसरी महिला के शोषण का शिकार तथा पारिवारिक त्रासदी को भी सघन रूप में दिखाया गया है। पारिवारिक परिवेश में स्त्रियाँ किस तरह से अपने अधिकारों के लिए लड़ती है व उनको किन-किन समस्याओं से जूझना पड़ता है, इसे देखने की कोशिश की गयी है।

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध का **चतुर्थ अध्याय 'पारिजात' भाषा और शिल्प के आयाम** है। इस अध्याय के अंतर्गत नासिरा शर्मा के उपन्यास में प्रयुक्त भाषा, शिल्प एवं वाक्य विन्यास आदि को समझने का प्रयास किया गया है। इसका **प्रथम उप-अध्याय 'पारिजात' की भाषा** है। इसके अंतर्गत इस उपन्यास में किन-किन भाषाओं के शब्दों का प्रयोग किया गया है, इसे दिखाया गया है। जैसे-इस उपन्यास की पृष्ठभूमि इलाहाबाद, लखनऊ है। इन स्थानों पर प्रयोग की जाने वाली भाषा के शब्दों को दिखाया गया है। इसका **द्वितीय उप-अध्याय 'पारिजात' की शैली** है। इसके अंतर्गत इस उपन्यास में किस शैली का प्रयोग किया गया है, इसे दिखाया गया है। **तृतीय उप-अध्याय "लोकोक्तियां और मुहावरे"** है। इसके अंतर्गत इसमें प्रयुक्त लोकोक्तियों और मुहावरों को दिखाया गया है।

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबन्ध को पूर्ण करने में प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से गुरुजनों, मित्रों एवं वारिष्ठों की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। मैं उन सबकी सदा आभारी रहूँगी। सर्वप्रथम मैं अपने शोध-निर्देशक आदरणीय **डॉ. रामानुज अस्थाना** के प्रति आभार व्यक्त करती हूँ। उन्होंने न केवल मेरे शोध कार्य के दौरान कुशल निर्देशन किया बल्कि उचित मार्गदर्शन एवं महत्वपूर्ण पुस्तकों के साथ मुझे अपने शोध-प्रबंध से संबन्धित पत्रिकाएँ भी उपलब्ध कराई और समय-समय पर मेरा उत्साहवर्धन किया। जिसके परिणामस्वरूप यह शोध कार्य क्रमबद्ध रूप में संपन्न हो सका। मैं साहित्य विद्यापीठ की अधिष्ठाता प्रोफ़ेसर प्रीति सागर मैम के प्रति तथा हिन्दी एवं तुलनात्मक साहित्य विभाग के अध्यक्ष प्रोफ़ेसर कृष्ण कुमार सिंह के प्रति भी आभार व्यक्त करती हूँ और साथ ही विभाग के समस्त अध्यापकों के प्रति भी आभार व्यक्त करती हूँ। जिन्होंने समय- समय पर मेरा मार्गदर्शन किया। इसके साथ ही मैं नासिरा शर्मा और मुरली मोहन जी के प्रति भी आभार व्यक्त करती हूँ, जिन्होंने इंदौर से मेरे शोध विषय से संबन्धित महत्वपूर्ण सामग्री उपलब्ध कराई। इसके साथ ही मैं नई दिल्ली किताब घर प्रकाशन के अध्यक्ष सुशील सिद्धार्थ जी की आभारी हूँ, जिन्होंने मुझे शोध-पुस्तक आदि का मार्गदर्शन किया। मैं इन सभी की आभारी हूँ जिनके सहयोग से मेरा शोध प्रबन्ध सही दिशा से व्यवस्थित हो सका। इसके साथ ही मैं हिंदी एवं तुलनात्मक साहित्य विभाग के कर्मचारी विजय भैया, नितीश भैया व समस्त कर्मचारियों के प्रति भी आभार व्यक्त करती हूँ।

मैं अपने आदरणीय पिता श्री राम आसरे और माता श्रीमती चंदा देवी एवं परिवार के अन्य सदस्यों के प्रति आभार व्यक्त करती हूँ जिन्होंने मुझे इस लायक बनाया, जिसे मैं शब्दों में व्यक्त नहीं कर सकती। मैं अपने अग्रज भाई संतोष कुमार के प्रति भी आभार व्यक्त करती हूँ, जिन्होंने मेरा उत्साहवर्धन किया। इसके साथ ही मैं अपने अनुज भाई संजीव व जीजू मदन लाल जी की भी आभारी हूँ, जिन्होंने मुझे पूर्ण सहयोग के साथ-साथ मेरा उत्साहवर्धन भी किया। मैं अपने मित्रों एवं सहपाठियों के प्रति भी आभार व्यक्त करती हूँ जिन्होंने हर तरह से मेरा सहयोग किया। जिसमें वरिष्ठ रवीन्द्र कुमार यादव, रामचंद्र, रंजीत कुमार निषाद, नरेश साहू, रोशन कुमार के प्रति भी आभार व्यक्त करती हूँ जिन्होंने अपने व्यस्ततम समय में मेरा सहयोग व उत्साहवर्धन करके मुझे सही दृष्टि प्रदान की। मैं अपने सहपाठी अमित, रामलखन, मनीषा, पूजा, राकेश, संजू, देवेंद्र के प्रति विशेष आभारी हूँ। जिन्होंने अपने-अपने तरीकों से समय-समय पर सहयोग किया। इसके साथ ही मैं महापंडित राहुल सांकृत्यायन केंद्रीय पुस्तकालय, वर्धा एवं विभागीय पुस्तकालय 'महादेवी वर्मा पुस्तकालय' तथा दिल्ली विश्वविद्यालय के केंद्रीय पुस्तकालय के प्रति भी आभार व्यक्त करती हूँ। जहाँ

से मुझे अपने शोध विषय से संबंधित अत्यंत महत्वपूर्ण पुस्तकें उपलब्ध हुईं जिनका मैंने अपने शोध में उपयोग भी किया है।

दिनांक: **हेमलता**